कक्षा-सातवीं
विषय-हिन्दी
पाठ-४बातूनी

चलो कुछ बातें कर लें -

यह किस फ़िल्म का दृश्य है ?

कलाकार का नाम बताएँ ?

इन कलाकार के व्यवहार में क्या अंतर आपको दिखाई दे रहा है?

महिला कलाकार के व्यवहार की एक खास बात बताएँ ?

आप इस तरह के व्यक्तित्त्व वाले व्यक्ति के लिए एक शब्द लिखें –

अथवा

जो बहुत अधिक बातें करें -

बातूनी

हरिशंकर परसाई

मेरी कलम से……

- हरिशंकर परसाई (२२ अगस्त, १९२२ – १० अगस्त, १९९५) हिंदी के प्रसिद्ध लेखक और व्यंग्यकार थे। उनका जन्म जमानी, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश में हुआ था। वे हिंदी के पहले रचनाकार हैं, जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के–फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से उबारकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा। श्री हरिशंकर जी का झुकाव अधिकतर सर्वहारा वर्ग की ओर अधिक था| 15 अगस्त, 1947 को हमारा देश आजाद हुआ था तत्समय सारे देश में आदर्शवादिता चरम सीमा पर थी और लोगों के दिलों में आदर्शवादिता का ज़ज्बा कायम था| लोगों के नए-नए अरमान थे| वे देश और साहित्य के लिए समर्पित थे |

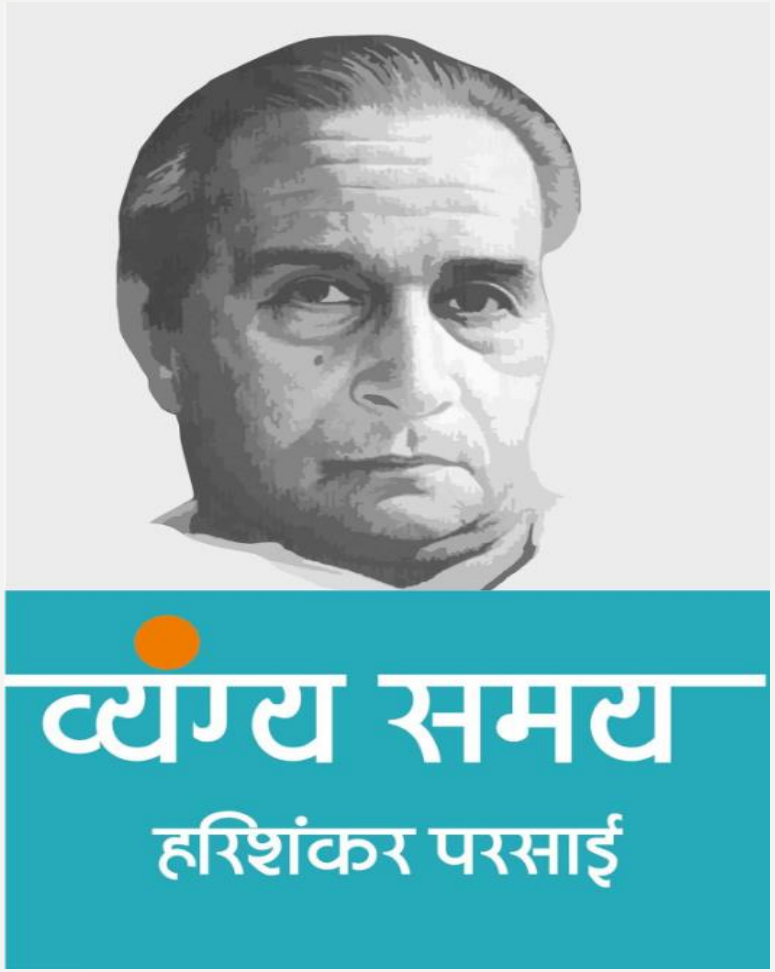

कुछ लेखक के लेख के बारे में : हरिशंकर परसाई

हम सभी को हास्य तथा व्यंग्य पढ़ना बहुत ही अच्छा लगता है। हिंदी के जाने-माने व्यंग्य के लेखकों में एक अग्रणी नाम है – हरिशंकर परसाई। हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त, 1924 जमानी, होशंगाबाद, मध्य प्रदेश में हुआ।

हरिशंकर परसाई जी का व्यंग्य लेखन सिर्फ मनोरंजन के लिए ही नहीं था बल्कि समाज की बुराइयों की तरफ पाठक का ध्यान खींचना था। उन्होंने समाज तथा राजनीति में फैले भ्रष्टाचार पर करारा व्यंग्य किया है।

कहानी का सार :

पाठ ‘बातूनी’ लेखक हरिशंकर परसाई जी द्वारा लिखित कहानी है| लेखक ने यह पाठ कहानी विधा में लिखा है| इस कहानी के माध्यम से लेखक ने एक घटना का वर्णन करते हुए यह समझाने का प्रयास किया है कि अनावश्यक बोलना या अत्यधिक बोलना न केवल हमारी छवि ख़राब करता है बल्कि यह अन्य लोगों के लिए भी हानिकारक है| इससे बोलने वाले और सुनने वाले दोनों का ही समय बर्बाद होता है| इस कहानी में भी एक अत्यधिक बोलने वाले सज्जन से लेखक परेशान हो गए थे| लेखक ने एक बार इस सज्जन को एक ज़रूरी लिफ़ाफ़ा पोस्ट ऑफिस में डालने का काम दिया| जब लेखक ने उस सज्जन से पूछा कि क्या उसका काम हो गया, तब उसने लगभग आधे घंटे से अधिक समय में पूरा विवरण सुनाया| जैसे- घर से निकला, साहनी मेडिकल स्टोर पर जाना, राजू से मिलना, भागकर पोस्ट ऑफिस बंद होने के समय तक पहुँच जाना आदि| बात इतने पर भी ख़त्म नहीं होती| इस एक काम के बदले जब भी लेखक को सज्जन रास्ते में मिल जाता, वह लेखक से लम्बी-लम्बी बातें करता| उसने कभी लेखक के मन या उसके समय का ध्यान नहीं रखा | उससे बचने के लिए लेखक ने रास्ता बदला |वह सज्जन से इतना डर गए थे कि उन्होंने पहले वाला ही रास्ता अपनाने का निर्णय लिया | कहानी के माध्यम से लेखक ने यह समझाने का प्रयास किया है कि कम शब्दों में अपनी बात कहनी चाहिए | साथ ही किसी से भी बातचीत करते समय अपने तथा सामने वाले के समय का अवश्य ध्यान रखना चाहिए|

विद्यार्थियों के द्वारा पाठ का आदर्श वाचन एवं अध्यापिका के द्वारा स्पष्टीकरण |

बातूनी

सज्जन को पोस्ट ऑफिस में एक ज़रूरी लिफ़ाफ़ा छोड़ना था और पोस्ट ऑफिस के बंद होने का समय हो रहा था| तो उन्हें सामने से एक सज्जन साइकिल पर जाते दिखे तो उन्होंने उसे रोककर पूछा, “ज़रा एक लिफ़ाफ़ा लेकर इस काग़ज़ को उसमें रखकर यह पता लिखकर डाक में छोड़ दीजिए |” उन्होंने कहा, “सहर्ष|” बस उनके सहर्ष ने लेखक का हर्ष तभी से जो छीना है, वह तो आज तक वापस नहीं मिला| दूसरे दिन वे दिख गए, तो लेखक ने उससे पूछा, “वह चिट्ठी डाल दी थी?” अब इस प्रश्न का उत्तर ज्यादा-से-ज़्यादा कितना लंबा हो सकता है? यही कि-जी हाँ साहब, मैंने आपकी चिट्ठी टिकट लगाकर और पता लिखकर पोस्ट ऑफिस के लाल लेटर बॉक्स में छोड़ दी थी| बस| इससे ज़्यादा तो नहीँ हो सकता |

- परन्तु लेखक के इस प्रकार के प्रश्न पूछने पर उस सज्जन ने अपने काम का ब्यौरा लगभग आधे घंटे से अधिक समय में पूरा विवरण सुनाया| जैसे- घर से निकला, साहनी मेडिकल स्टोर पर जाना, राजू से मिलना, भागकर पोस्ट ऑफिस बंद होने के समय तक पहुँच जाना आदि| बात इतने पर भी ख़त्म नहीं होती| इस एक काम के बदले जब भी लेखक को सज्जन रास्ते में मिल जाता, तो वह लेखक से लम्बी-लम्बी बातें करता| लेखक उससे बचने के लिए किसी का भी नाम लेते वह उनका चाचा, मामा या पिता का दोस्त निकल आता और वे 10-15 मिनट उसके संबंधों को बताते| लेखक उनसे इतना परेशान हो गए थे कि वे कहते एक दिन कहूँगा कि डाकू ज़ालिम सिंह से मिलने जा रहा हूँ, तो वह भी उनका रिश्तेदार निकलेगा |तो फिर कभी कहूँगा कि भगवान से मिलने जा रहा हूँ तो वह इस पर भी वे कहेंगे कि अच्छा वे तो मेरे चाचा के बड़े अच्छे दोस्त हैं |इस प्रकार लेखक उनसे परेशान हो गए |

उस बातूनी व्यक्ति के कारण लेखक की यह स्थिति हो गई थी कि वह छोटे रास्ते को छोड़कर करीब आधा मील का चक्कर लगाकर जाते हैं| एक दिन वह बातूनी बाज़ार में लेखक को मिल गए तो उस सज्जन के द्वारा यह पूछने पर कि आप तो दिखाई नहीँ देते| लेखक ने जवाब दिया कि बाहर निकलता ही नहीं| तो सज्जन ने तुरंत कहा कि तो फिर घर पर ही दर्शन करूँगा|लेखक को उस सज्जन से डर लगने लगा है| लेखक को देखते ही सज्जन का चेहरा खिल उठता है| उनके चेहरे पर वहीं भाव होता है, जो सुरसा के मुख पर हनुमान को देखकर आया था| सुरसा ने कहा था-आज सुरन मोहि दीन अहारा| आज देवताओं ने मुझे भोजन दिया| ये सज्जन भी किसी परिचित को देखकर मन-ही-मन कहते हैं-आज सुरन मोहि दीन अहारा| वे पास आकर हाथ पकड़ लेंगे और एक पाँव से आपका पाँव दबा लेंगे और मुँह मिलाकर घंटे-भर बकते जाएँगे|

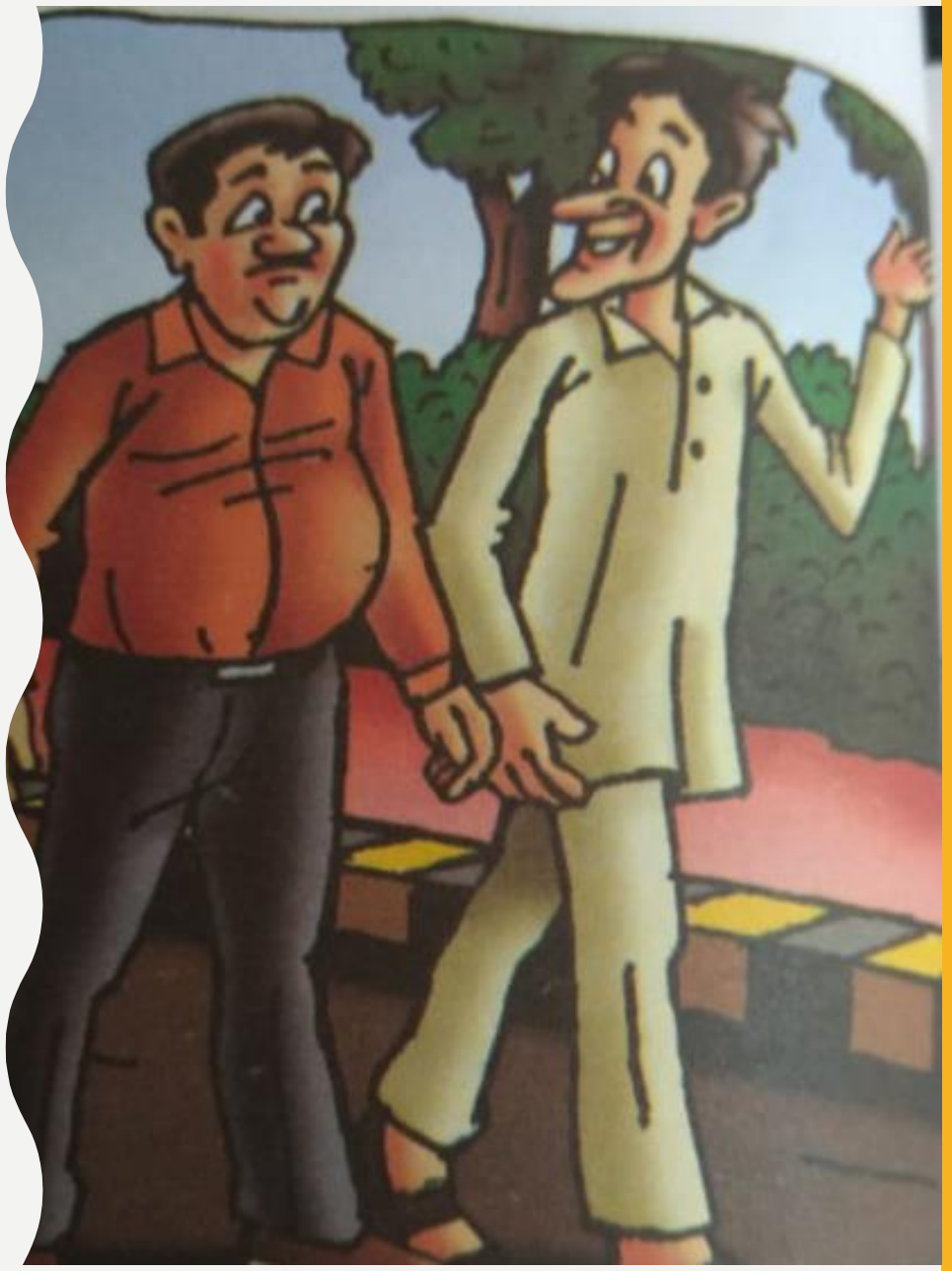

विचार मंथन :

- ज़रूरत से ज्यादा बोलने के दुष्परिणामों पर पाठ के आधार पर सामान्य चर्चा |
- यदि सज्जन प्रारंभ में ही लेखक को कार्य करने से मना कर देते तो कहानी क्या मोड़ लेती ?

रचनात्मक गतिविधि :

कहानी का सन्देश :

कम-से-कम शब्दों में अर्थ अभिव्यक्त करने की क्षमता विकसित करना | “काम ज्यादा, बातें कम की उक्ति पर काम करना |

लेखन कार्य :

अनुच्छेद लेखन :

बातचीत की कला

संकेत बिंदु : विषय से सम्बंधित कुछ पंक्तियाँ

बातचीत की आवश्यकता

बातचीत करते समय रखने वाली सावधानियाँ

प्रभावशाली बातचीत के लिए आवश्यक गुण

सफलता के शिखर पर पहुँचने वालों के उदाहरण

निष्कर्ष

नोट: प्रारम्भ आप इन पंक्तियों के द्वारा कर सकते हैं –

बातचीत की कला निराली , छलके शब्दों की मधु प्याली |

यह जग में पहचान बनाती, जीने की है कला सिखाती||

नोट : स्लाइड क्रमांक १०(रचनात्मक गतिविधि)तथा १२ (लेखन कार्य)के कार्य को ही उत्तरपुस्तिका में करना है|

LINKS: FOR THE VIDEO

HTTPS://WWW.YOUTUBE.COM/WATCH?V=U3VXXZS4SLU

HTTPS://WWW.YOUTUBE.COM/WATCH?V=GTVZ3MDZP5Q